

स्थानीय स्वशासन और ग्रामीण विकास: पंचायती राज व्यवस्था का मूल्यांकन

राजेंद्र कुमार वर्मा, सहायक आचार्य, सुरेंद्रा कॉलेज, श्री गंगानगर (राजस्थान)

सारांश

स्थानीय स्वशासन लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण का महत्वपूर्ण माध्यम है और ग्रामीण भारत के विकास में पंचायती राज संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। 73वें संविधान संशोधन के माध्यम से पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक दर्जा प्राप्त होने के बाद ग्रामीण स्तर पर राजनीतिक भागीदारी, विकेंद्रीकरण और विकास की प्रक्रिया को नई दिशा मिली। ग्राम पंचायतों ने स्थानीय आवश्यकताओं की पहचान, विकास योजनाओं के क्रियान्वयन, सार्वजनिक सेवाओं की उपलब्धता तथा ग्रामीण समुदाय की राजनीतिक भागीदारी को बढ़ाने में योगदान दिया है। विशेष रूप से महिलाओं, अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षण ने स्थानीय राजनीति में प्रतिनिधित्व के नए अवसर उत्पन्न किए हैं। इसके बावजूद वित्तीय संसाधनों की कमी, प्रशासनिक निर्भरता, सीमित अधिकार, क्षमता का अभाव और स्थानीय राजनीतिक हस्तक्षेप जैसी चुनौतियाँ पंचायती राज संस्थाओं की प्रभावशीलता को प्रभावित करती हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य स्थानीय स्वशासन और ग्रामीण विकास के बीच संबंध का विश्लेषण करते हुए पंचायती राज व्यवस्था की उपलब्धियों और चुनौतियों का मूल्यांकन करना है। निष्कर्षतः, प्रभावी विकेंद्रीकरण, पर्याप्त वित्तीय संसाधन, प्रशासनिक स्वायत्तता और जनभागीदारी पंचायती राज व्यवस्था को अधिक प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक हैं।

मुख्य शब्द: स्थानीय स्वशासन, पंचायती राज, ग्रामीण विकास, विकेंद्रीकरण, ग्राम पंचायत, जनभागीदारी, राजनीतिक सशक्तिकरण